जैन बाल-शिक्षा

उपाध्याय अमर मुनि

भाग २

सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन्मति साहित्य-रत्नमाला का तीसरा रत्न

जैन बाल-शिक्षा

भाग दूसरा

सम्पादक
उपाध्याय अमरमुनि

सन्मति ज्ञानपीठ, आगरा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशक :
सन्मति ज्ञानपीठ
लोहामण्डी, आगरा।

नवम् संस्करण : १९८६

मूल्य : ५ रुपया

मुद्रक :
वीरायतन मुद्रणालय
वीरायतन-राजगीर, नालन्दा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दो शब्द

शिक्षा मानव जीवन की उन्नति का सबसे बड़ा साधन है। किसी भी देश, जाति और धर्म का अभ्युदय, उसकी अपनी ऊँची शिक्षा पर ही निर्भर है। हर्ष है कि जैन समाज अब इस ओर लक्ष्य देने लगा है और हर जगह शिक्षण-संस्थाओं का आयोजन हो रहा है।

परन्तु लौकिक शिक्षा के साथ धार्मिक शिक्षा का जैसा चाहिए वैसा, प्रबन्ध नहीं हो पाया है। जहाँ कहीं प्रबन्ध किया भी गया है, वहाँ धार्मिक शिक्षा का अभ्यास-क्रम अच्छा न होने से वह पनप नहीं पाया है।

हमारी बहुत दिनों से इच्छा थी कि यह कार्य किसी अच्छे विद्वान के हाथों से सम्पन्न हो। हमें लिखते हुए हर्ष होता है कि उपाध्याय कविरत्न श्री अमरचन्द्र जी महाराज के द्वारा यह कार्य प्रारम्भ किया है। बालकों की मनोवृत्ति को ध्यान में रखकर ही उनकी योग्यतानुसार यह धर्म-शिक्षा का पाठ्यक्रम आपके सामने है। आप देखेंगे, कि किस सुन्दर पद्धति से धार्मिक, सैद्धान्तिक, नैतिक और ऐतिहासिक विषयों का उचित संकलन किया गया है। आशा है, यह पाठ्यक्रम धार्मिक शिक्षा की पूर्ति करेगा।

ओमप्रकाश जैन
मन्त्री—सन्मति ज्ञानपीठ
लोहामण्डी, आगरा

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विषय-सूची

१	विनय	....	२
२	नवकार मन्त्र और उसकी महिमा	....	४
३	सच बोलूँ (कविता)	...	६
४	उपासना	...	८
५	अभ्यास (कविता)	...	११
६	प्रश्नोत्तर	...	१२
७	सीख (कविता)	....	१५
८	तीर्थंकर	...	१७
९	बताइए	...	२०
१०	वीर भामाशाह	...	२१
११	भगवान महावीर	...	२४
१२	प्रश्नोत्तर	...	२७
१३	धर्म	....	३०
१४	श्रम (कविता)	...	३३
१५	सोमा सती	...	३५
१६	स्थानक में क्या नहीं करना ?	...	३९
१७	विद्या	...	४१
१८	स्वस्थ शरीर स्वर्ग है	...	४३
१९	प्रयाण गीत	...	४५
२०	जब भी बोलो	...	४६
२१	लड़के की समझदारी	...	४७
२२	शिक्षा का प्रारम्भ	...	४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वन्दना

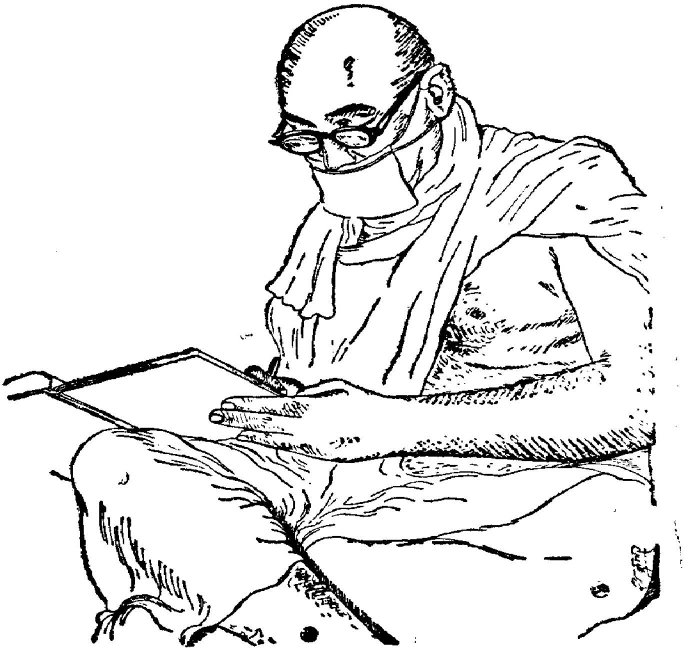

जय जय सन्मति, वीर हितंकर !
जय जय वीतराग, जय शंकर !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

: १ :

विनय

हे भगवान !
दया - निधान !!
हम पाएँ इतना बरदान !

चाहे :ख हो,
चाहे सुख हो,
रहे सत्य का हर दम ध्यान !

बाधाओं में
विपदाओं में,
धीरज धरें, बनें बलवान !

तन मन वारें,
जीवन वारें,
देश, धर्म पर हों बलिदान !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महामन्त्र नवकार

नमो अरहंताणं,
नमो सिद्धाणं,
नमो आयरियाणं,
नमो उवज्झायाणं,
नमो लोए अव्व साहूणं ।

अर्थ

अरहन्तों को नमस्कार हो ।
सिद्धों को नमस्कार हो ।
आचार्यों को नमस्कार हो ।
उपाध्यायों को नमस्कार हो ।
लोक में सब साधुओं को नमस्कार हो ।

यह नवकार मन्त्र है । इसके पाँच पद हैं और सब मिलाकर पेंतीस अक्षर हैं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवकार मन्त्र को प्राचीन काल में नमोक्कार मन्त्र भी कहते थे ।

नवकार महामन्त्र की महिमा

(चूलिका)

एसो पंच - नमोक्कारो,
सव्व - पाव - प्पणासणो ।
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ॥

अर्थ

यह पाँच पदों को नमस्कार,
सब पापों का नाश करने वाला है ।
संसार के सब मंगलों में—
पहला अर्थात् श्रेष्ठ मंगल है ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सचमुच ही नवकार मन्त्र की महिमा अपार है। कहा भी है—

सब से बढ़कर है नवकार,
करता है भव - सागर पार !
श्री जिन - वाणी का यह सार,
बार - बार जपो नवकार !

अभ्यास

१ नवकार मन्त्री पढ़ो ?

२ नवकार के कुल कितने पद हैं ?

३ नवकार के कुल कितने अक्षर हैं ?

४ नवकार मन्त्र के महात्म्य का पाठ बोलो ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सच बोलूँ

मैं सच बोलूँ
मैं सच बोलूँ

चन्दन महके, बेला महके,
गुल गुलाब अलबेला महके।
सच बोलूँ मन मेरा महके,
मेरे मुँह की महक निराली।

मैं सच बोलूँ,
मैं सच बोलूँ!

मैं सच बोलूँ,
मैं सच बोलूँ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चाँदी दमके, सोना दमके,
हीरे का हर कोना चमके।
सच बोलूँ मुँह मेरा दमके,
मेरे मुँह की दमक निराली।

मैं सच बोलूँ,
मैं सच बोलूँ !

मैं सच बोलूँ,
मैं सच बोलूँ !

चन्दा चमके, तारा चमके,
सूरज प्यारा - प्यारा चमके,
सच बोलूँ, मन मेरा चमके।
मेरे मन की चमक निराली।

मैं सच बोलूँ,
मैं सच बोलू।

मैं सच बोलूँ,
मैं सच बोलूँ !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

: ४ :

उपासना

भगवान का नाम-स्मरण करने को ही उपासना कहते हैं। उपासना करने के लिए एकान्त और शुद्ध स्थान में अथवा स्थानक में जाकर, पूर्व की या उत्तर की ओर मुख करके, पालथी लगाकर बैठना चाहिए। आँखें आधी बन्द और आधी खुली रखनी चाहिए। उपासना के ससय शरीर हिलाना डुलाना नहीं चाहिए। इस समय न किसी से बातें करनी चाहिए और न किसी की ओर देखना चाहिए।

भगवान का नाम-स्मरण करने का सरल उपाय यह है, कि नवकार मन्त्र का कम से कम एक-सौ आठ बार जप करना चाहिए। जप करते समय नवकार मन्त्र बहुत मधुर, स्पष्ट और मन्द स्वर से बोलना चाहिए। अथवा मौन रहकर मन ही मन में जप करना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जप अंगुलियों पर या माला के द्वारा किया जा सकता है। यदि अंगुलियों पर जप करना हो, तो दांये हाथ की चार अंगुलियों के बारह पोरुओं पर सबसे छोटी अंगुली के क्रम से नवकार मन्त्र पढ़-पढ़कर अंगूठा रखते जाएँ। जब इस प्रकार बारह बार नवकार मन्त्र का जाप हो जाए तो बायें हाथ के अंगूठे को बायें हाथ की ही सबसे छोटी एक अंगुली के एक पोरुए पर रक्खें। इस प्रकार जब बायें हाथ की तीन अंगुलियों के नौ पोरुए पर अंगूठा पहुंच जाए तो १०८ मंत्र का जप पूरा हो जायगा।

यदि माला पर जप करना हो, तो माला को दाहिने हाथ में लेकर अंगूठे और मध्यम (बीच की) अंगूली से मनकों को नवकार मन्त्र पढ़-पढ़कर सरकाते जाएँ। इस प्रकार मनकों को एक-एक सरकाते हुए जब एक-सौ आठ मनके पूरे हो जाएँ तो एक जप हो गया समझना चाहिए। यदि दूसरी माला फेरनी हो तो फिर वापस माला बदल कर जप करना चाहिए।

माला काठ के मनकों की या सूत की बनाई जाती है। माला को जहाँ-तहाँ जमीन पर नहीं पटक देना चाहिए। एकान्त शुद्ध स्थान पर रखना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवकार मन्त्र पढ़ते समय उसके अर्थ का भी विचार मन में करते रहना चाहिए। इससे मन एकाग्र हो जाएगा।

नवकार मन्त्र का जप करने से शान्ति मिलती है और मन में पवित्रता आती है। मन के पाप और दोषों को हटाने के लिए नवकार मन्त्र-जैसा दूसरा कोई मन्त्र नहीं है।

बालकों ! तुम्हें भी सब झंझटों से अलग होकर, दिन में कम-से-कम दो बार भगवान की उपासना अवश्य करनी चाहिए। इसके लिए प्रातःकाल और सायंकाल का समय सबसे अच्छा है।

अभ्यास

१. उपासना किसे कहते हैं ?
२. उपासना के लिए हमें किस प्रकार बैठना चाहिए ?
३. जप किस प्रकार करना चाहिए ?
४. माला फेरने की क्या विधि है ?
५. नवकार मन्त्र का जप क्यों करना चाहिए ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

: ५ :

अभ्यास

एक - एक यदि पेड़ लगाओ,
तो तुम बाग लगा दोगे।
एक - एक यदि ईंटें जोड़ो,
तो तुम महल बना लोगे।

एक - एक यदि पैसा जोड़ो,
तो बन जाओगे धनवान।
एक - एक यदि अक्षर सीखो,
तो बन जाओगे विद्वान।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

: ६ :

प्रश्नोत्तर

प्रश्न—जैन किसे कहते हैं ?

उत्तर—जो जिन भगवान को माने। और राग एवं द्वेष को जीतने का प्रयास करे।

प्रश्न—जिन किन्हें कहते हैं ?

उत्तर—जिसने राग और द्वेष का नाश कर दिया हो।

प्रश्न—जिन देव के और कोई दूसरे नाम भी हैं ?

उत्तर—हाँ हैं। जैसे अरहन्त, भगवान वीतराग, तीर्थङ्कर।

प्रश्न—जिन भगवान कौन होते हैं ?

उत्तर—जो सर्वज्ञ और समदर्शी हों।

प्रश्न—सर्वज्ञ, समदर्शी के क्या अर्थ हैं ?

उत्तर—जो सब कुछ जानता हो, सब कुछ देखता हो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न—अरहन्त किन्हे कहते हैं ?

उत्तर—जिन्होंने आत्मा के शत्रुओं का नाश कर दिया हो।

प्रश्न—आत्मा के शत्रु कौन हैं ?

उत्तर—आत्मा के शत्रु राग, द्वेष, मोह आदि हैं।

प्रश्न—वीतराग किसे कहते हैं ?

उत्तर—जिसने राग और द्वेष को जड़-मूल से नष्ट कर दिया हो।

प्रश्न—तुम्हारा बड़ा पर्व-दिन कौन-सा है ?

उत्तर—१. भगवान महावीर की जन्म-जयन्ती।

२. पर्युषण पर्व में संवत्सरी-पर्व।

प्रश्न—भगवान महावीर की जयन्ती कब होती है ?

उत्तर—चैत्र सुदी तेरस के दिन।

प्रश्न—संवत्सरी का पर्व कब होता है ?

उत्तर—भादवा सुदी पंचमी को।

प्रश्न—संवत्सरी के दिन क्या करना चाहिए ?

उत्तर—१. उपवास (व्रत) रखना चाहिए

२. हिंसा नहीं करनी चाहिऐ।

३. झूठ नहीं बोलना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. जीव - रक्षा के लिए दान करना चाहिए।

५. वर्ष भर में किए हुए पापों का पश्चात्ताप करना चाहिए।

६. सबसे अपने अपराधों की क्षमा माँगनी चाहिए।

प्रश्न—जब तुम लोग किसी से मिलो, तो किस प्रकार नमस्कार करना चाहिए ?

उत्तर—हाथ जोड़कर 'जयजिनेन्द्र' करना चाहिए।

अभ्यास

१. जैन किसे कहते हैं ?

२. जिन किन्हें कहते हैं ?

३. अरहन्त कौन होते हैं ?

४. भगवान महावीर का जन्म किस दिन हुआ था ?

५. संवत्सरी का पर्व कब होता है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीख

कभी न कोई चीज चुराना,
कभी न लालच में फँस जाना।
कभी न दिल से दया भुलाना,
कभी न कोई जीव सताना।
कभी न चिढ़ना और चिढ़ाना,
कभी न गाली मुँह पर लाना।
कभी न दुष्टों से भय खाना,
कभी न अपना धर्म गँवाना।
कभी न खा - खा पेट फुलाना,
कभी न खाते ही सो जाना।
कभी न पढ़ने से घबराना,
कभी न मन में आलस लाना।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कभी न करना ढोंग - बहाना,
कभी न सच्ची बात छिपाना।
कभी न बढ़ - बढ़ कर इतराना,
कभी न मन में गुस्सा लाना।
कभी न अपना नाम डुबाना,
कभी न कुल को दाग लगाना।
वीर प्रभू के नित गुण गाना,
जीवन अपना सफल बनाना।

भगवान महावीर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीर्थंकर

भारत वर्ष में जैन का उपदेश देने वाले चौबीस तीर्थंकर हो चुके हैं। 'तीर्थ का अर्थ 'धार्मिक संघ' है। साधु, साध्वी, श्रावक (गृहस्थ धर्म का पालन करने वाले पुरुष) और श्राविका (गृहस्थ धर्म का पालन करने वाली स्त्री) को संघ कहते हैं। इस प्रकार चार संघ की स्थापना करने के कारण, वीतराग देव अरहन्त, भगवान तीर्थंकर कहलाते हैं। तीर्थंकर, यानी तीर्थ की स्थापना करने वाले।

संसार में जब-जब धर्म का नाश होता है, और अधर्म बढ़ने लगता है, तब-तब तीर्थंकर महापुरुष जन्म लेते हैं, और भोग-विलास में फँसे हुए जगत को धर्म का मार्ग बताते हैं।

तीर्थंकर ईश्वर के अवतार नहीं होते। परन्तु जो आत्मा राग और द्वेष का नाश कर, केवल ज्ञान (पूर्णज्ञान) प्राप्त कर लेते हैं और धर्म-तीर्थ की स्थापना करते हैं, वे तीर्थंकर बन जाते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीर्थंकरों के चरणों में स्वर्ग के इन्द्र भी नमस्कार करते हैं। एक कालचक्र में २४ तीर्थंकर होते हैं।

वर्तमान कालचक्र में जो चौवीस तीर्थंकर हुए हैं, उनके पवित्र नाम इस भाँति हैं :—

१.	श्री ऋषभदेव जी	१३.	श्री विमलनाथ जी
२.	श्री अजितनाथ जी	१४.	श्री अनन्तनाथ जी
३.	श्री संभवनाथ जी	१५.	श्री धर्मनाथ जी
४.	श्री अभिनन्दन जी	१६.	श्री शान्तिनाथ जी
५.	श्री सुमतिनाथ जी	१७.	श्री कुन्थुनाथ जी
६.	श्री पद्मप्रभ जी	१८.	श्री अरहनाथ जी
७.	श्री सुपार्श्वनाथ जी	१९.	श्री मल्लिनाथ जी
८.	श्री चन्द्रप्रभू जी	२०.	श्री मुनि सुव्रत जी
९.	श्री सुविधिनाथ जी	२१.	श्री नमिनाथ जी
१०.	श्री शीतलनाथ जी	२२.	श्री नेमिनाथ जी
११.	श्री श्रेयांसनाथ जी	२३.	श्री पार्श्वनाथ जी
१२.	श्री वासुपूज्य जी	२४.	श्री महावीरस्वामी जी

भगवान ऋषभदेव का दूसरा नाम आदिनाथ भी है।

नौवें तीर्थंकर श्री सुविधिनाथ जी का दूसरा नाम श्री पुष्पदन्त भी है। इसी प्रकार बाईसवें तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जी का दूसरा नाम अरिष्टनेमि भी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौवीचवें तीर्थंकर श्री भगवान महावीर स्वामी के बहुत नाम हैं। उन्हें वीर, अतिवीर, सन्मति और वर्द्धमान भी कहते हैं।

अभ्यास

१. तीर्थंकर किसे कहते हैं ?

२. तीर्थंकर कितने होते हैं ?

३. पहले और सोलहवे तीर्थंकर का नाम बताओ ?

४. श्री पार्श्वनाथ कौन से तीर्थंकर हैं ?

५. श्री नेमिनाथ जी का दूसरा नाम क्या है ?

६. श्री सुविधिनाथ जी का दूसरा नाम क्या है ?

७. भगवान महावीर के और क्या - क्या नाम है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

: ६ :

बताइए

अच्छा कौन ?	सबसे गुण लेने वाला ।
बुरा कौन ?	दूसरों के दोष देखने वाला ।
अन्धा कौन ?	दुःखी को देखकर भी दया न करने वाला ।
बहरा कौन ?	हित की बात न सुनने वाला ।
वीर कौन ?	धर्म पर दृढ़ रहने वाला ।
कायर कौन ?	धर्म से डिगने वाला ।
चोर कौन ?	अनीति से कमाई करने वाला ।
साहूकार कौन ?	नीति से कमाई करने वाला ।
बलवान कौन ?	अपने पर भरोसा करने वाला ।
निर्बल कौन ?	दूसरों के भरोसे रहने वाला ।
रोगी कौन ?	भूख से ज्यादा खाने वाला ।
नीरोग कौन ?	भूख से कम खाने वाला ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

: १० :

वीर भामाशाह

बादशाह अकबर से हार कर महाराणा प्रताप, एक सघन जंगल में चले गए। वे एकान्त में बैठे-बैठे चिन्ता कर रहे थे। उस समय एक वृद्ध, किन्तु हृष्ट पुष्ट आदमी आता दिखाई दिया।

उसने आते ही कहा—"जय हो, महाराणा प्रताप की।" महाराणा ने आँख उठाकर उसे देखा। आने वाले की आँखों से टपाटप आंसू गिर रहे थे। उसने महाराणा के पाँव पकड़ कर कहा—"महाराणा जी! आप इतने चिन्तित क्यों हो रहे हैं?"

महाराणा ने उत्तर दिया—"भामाशाह मैं क्या बताऊँ। इस समय तो खाने को अन्न का एक दाता तक नहीं रहा। बच्चे और सिपाही सब भूखे मर रहे हैं। ऐसी अवस्था में शत्रु से लड़ना भला कैसे बने?"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भामाशाह बड़े विनय के साथ बोले— "प्रभो ! आप इस बात की तनिक भी चिन्ता न करें। देखिए, सामने क्या आ रहा है ?"

महाराणा ने बड़े आश्चर्य चकित होकर देखा, कि थोड़ी देर में ही चाँदी, सोना, जवाहरात और रुपयों से लदी गाड़ियाँ वहाँ आ पहुंची। महाराणा बोले – "भामाशाह ! इतना द्रव्य ! यह सब कहाँ से लाये ?"

भामाशाह ने गद्गद् कण्ठ से कहा— महाराणा जी, यह सब मेवाड़ की और आपकी ही सम्पत्ति है। मैं तो इसका रखवाला हूं। आप सेना जमा करें और राज्य को फिर से जीतें।

महाराणा की आँखों से हर्ष के आँसू गिरने लगे। उन्होंने तलवार उठाकर प्रतिज्ञा की कि जब तक मैं अपना पूरा राज्य न जीत लूंगा, तब तक सोने और चाँदी के थाली में भोजन नहीं करूँगा; घास के बिछौने पर सोऊँगा और पूर्ण ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा।

अन्त में भामाशाह की सहायता से महाराणा ने अपना राज्य जीत ही लिया।

भामाशाह एक सच्चा जैन गृहस्थ था। वह देश - भक्त था। अपना धर्म पालते हुए नीति से धन कमाता था और उसे देश के उद्धार के लिए खर्च करता था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बालको ! तुम भामाशाह की तरह समय पड़ने पर देश पर सब कुछ न्योछावर करने को तैयार रहो।

अभ्यास

१. महाराणा प्रताप क्यों चिन्तित थे ?

२. भामाशाह ने क्या किया ?

३. भामाशाह कौन था ?

४. इस पाठ से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

भगवान महावीर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महावीर भगवान्

भगवान् महावीर ईसा से पाँच-सौ निन्यानवें (५९९) वर्ष पूर्व बिहार प्रान्त (तत्कालीन राजधानी वैशाली, क्षत्रिय कुण्ड) में पैदा हुए थे। उनके पिता का नाम सिद्धार्थ था वे क्षत्रिय थे। उनकी माता रानी त्रिशला थीं, जो वज्जियों के प्रजातन्त्र के प्रमुख राजा चेटक की बहन थीं।

बचपन में वे 'वीर' नाम से पुकारे जाते थे। उनका नाम 'वर्धमान' और 'सन्मति' भी था। महावीर उनका पीछे का नाम है। उनका यह नाम इस तरह पड़ा कि एक बार वे अपने कुछ बाल मित्रों के साथ खेल रहे थे। उस समय ऐक बड़ा भयंकर काला साँप कहीं से निकल आया और फन फैलाकर खड़ा हो गया। सारे बालक भय के मारे भागने लगे, किन्तु भगवान् को जरा भी भय न लगा। उन्होंने साँप को पकड़ कर उठा लिया और एक ओर छोड़

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिया। सचमुच में वह साँप नहीं था, देवता था। वह तो भगवान् की परीक्षा लेने आया था। जब भगवान् डरे नहीं तो उसने प्रगट होकर कहा— "तुम सचमुच में महावीर हो।" इस तरह उनका नाम महावीर पड़ गया।

जब वे तीस साल के हुए, तो उन्होंने अपना धन गरीबों को बाँट दिया और एक दिन अपना राजपाट और परिवार छोड़कर मुनि बन गए। उन्होंने साढ़े बारह वर्ष तक घोर तप किया। तब वे तीर्थंकर भगवान् हो गए। वे सर्वज्ञ एवं समदर्शी बन गए।

तब उन्होंने तीस साल तक जगह - जगह उपदेश दिया। उन्होंने कहा— तमाम प्राणियों को अपने— जैसा समझो और किसी को मत सताओ। तुम सुख चाहते हो। तो दूसरों को भी सुख दो। तुम पाप से घृणा करो. पापी से नहीं।"

उन्होंने अहिंसा का खूब प्रचार किया हजारों— लाखों स्त्री और पुरुष जैन धर्म को मानने लगे। उन्होंने कोई नया धर्म नहीं चलाया। वे तो चौबीसवें तीर्थंकर थे। उनसे पहले ऋषभदेव, पार्श्वनाथ आदि तेईस तीर्थंकर और हो चुके थे। जब अधर्म अधिक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फैल जाता है, तब तीर्थंकर जन्म लेते हैं और वे अधर्म को दूर करके धर्म फैलाते हैं।

जब महावीर स्वामी ७२ वर्ष के हुए, तब बिहार के पावापुरी नामक स्थान से, दिवाली की रात को वे मुक्त हो गए। मुक्त उसे कहते हैं, जो सदा के लिए संसार के बन्धन से छूट जाता है और फिर लौटकर बन्धन में नहीं आता।

अभ्यास

१ महावीर स्वामी कहाँ उत्पन्न हुए थे ?
२ महावीर स्वामी के माता - पिता कौन थे ?
३ उनका नाम महावीर किस प्रकार पड़ा ?
४ वे मुनि कब बने और फिर क्या किया ?
५ उन्होंने क्यों उपदेश दिया ?
६ वे कब और कहाँ मुक्त हुए ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

: १५ :

प्रश्नोत्तर

प्रश्न—तुम्हारे गुरु कौन होते हैं ?

उत्तर—जैन साधु ।

प्रश्न—जैन साधु की पहचान क्या है ?

उत्तर— १ मुख पर कपड़े की मुंहपत्ती होती है

२ जीवरक्षा के लिए ऊन का रजोहरण रखते हैं ।

३ भोजन के लिए काठ के पात्र रखते हैं ।

४ पैदल चलते हैं, सवारी पर नहीं बैठते ।

५ गृहस्थों के घर से गोचरी माँग कर लाते हैं ।

६ सफेद कपड़े, चादर वगैरह रखते हैं ।

७ नंगे पैर रहते हैं, जूता नहीं पहनते ।

८ रुपया पैसा नहीं रखते ।

९ कच्चा पानी नहीं पीते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१० हरी सब्जी, फल फूल नहीं खाते।

११ सिर के बालों का लोच करते हैं अर्थात् उन्हें हाथों से उखाड़ते हैं।

प्रश्न—तुम्हारे गुरु तुम्हें क्या शिक्षा देते हैं ?

उत्तर—१ पाँच पापों का त्याग करो।

२ सप्त कुव्यसनों को छोड़ो।

प्रश्न—पाँच पाप कौन से हैं।

उत्तर— १ हिंसा

२ झूठ

३ चोरी

४ कुशील अर्थात् व्यभिचार

५ परिग्रह अर्थात् लालच

प्रश्न—सप्त कुव्यसन कौन से हैं ?

उत्तर—"जुआ खेलना, मांस, मद, वेश्यागमन शिकार।
चोरी, पर रमणी-रमण, सातों व्यसन निवार॥"
अर्थात् 'जुआ, मांस, शराब, वेश्यागमन, शिकार, चोरी, पराई स्त्रियों के साथ अनुचित सम्बन्ध—ये सातों बुरी आदतें हैं।' इनका त्याग करना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रश्न—तुम्हारे धार्मिक स्थान को क्या कहते हैं ?

उत्तर—जैन स्थानक या जैन - उपाश्रय ।

अभ्यास

१ तुम्हारे गुरु कौन होते हैं ?
२ जैन साधु की क्या पहचान है ?
३ पांच पाप कौन से हैं ?
४ सात कुव्यसनों के नाम बताओ ?
५ जैन स्थानक का दूसरा क्या नाम है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

: १६ :

धर्म

आज कल धर्म के सम्बन्ध में बड़ा गड़बड़ झाला है। हर एक पन्थ और हर एक आदमी अपना अलग-अलग धर्म बतलाता है। सब ओर अपनी-अपनी ढपली और अपना-अपना राग है। कोई किसी काम को धर्म बताता है, तो कोई किसी काम को।

सच्चा धर्म क्या है; यह अभी बहुत कम लोग जानते हैं।

क्या तुम्हें एक ही बोल में धर्म का मर्म समझना है? अगर समझना है, तो लो बताऊँ!

याद रखना!

भूल न जाना?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"जिस काम से अपना भला हो वह धर्म है।"

अपना भला कैसे हो?
दूसरों का भला करने से।

जैन धर्म का निचोड़ है—दूसरो की भलाई
सब धर्मों का सार है—परोपकार, जनसेवा

(१)

"भलाई कर चलो जग में,
तुम्हारा भी भला होगा
वही है जैन सच्चा, जो
भलाई ढला होगा ॥"

(२)

खुश रहना, खुश रखना,
जीना और जिलाना।
नाथ ! मेरे जीवन का
बस, एक यही हो गाना ॥"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभ्यास

१ धर्म का मर्म क्या है ?

२ दूसरों की भलाई करना पाप है या धर्म ?

३ अपना भला कैसे होता है ?

४ सच्चा जैन कौन है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

: १४ :

श्रम और सहयोग

उठ उठ कर लहरें गिर जातीं,
किन्तु किनारे तक आ जातीं।
तुम कहते हो जिसको सागर,
बनता बूँद-बूँद से मिलकर ॥

जलधर की भी यही कहानी,
धीरे-धीरे उड़ता पानी।
कंकड़ मिल पर्वत बन जाते,
दुनियाँ में ऊँचे उठ जाते ॥

तुच्छ बीज भी क्रमशः बढ़ता,
फल फलों को धारण करता।
रेशे-रेमे यदि मिल पाते,
रस्सा वह मजबूत बनाते ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसमान के छोटे तारे,
कभी न हम से अब तक हारे।

कदम - कदम यदि हम बढ़ते हैं,
शिखरों पर हम जा चढ़ते हैं॥

सबको है संघर्ष उठाता,
व्यर्थ नहीं श्रम हरगिज जाता।

दुनियाँ में सहयोग बड़ा है,
स्नेह बड़ा है—त्याग बड़ा है॥

★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

: १५ :

सोमा सती

यह बात बहुत पुराने जमाने की है। एक सेठ बड़े ही धर्मात्मा थे। वे जैन धर्म का पालन करते थे। रोज सुबह उठकर नवकार नवकार मन्त्र पढ़ना, सामायिक करना और गुरुदेव के दर्शन करना, उनका काम था।

सेठ साहब की एक बेटी थी, उसका नाम था सोमा। वह पिता के समान ही बड़ी लगन से धर्म का पालन करती थी। श्री गुरुदेव से, रोज सुबह उठ कर सामायिक करने का, उसने नियम ले लिया था।

बड़ी होने पर जब उसकी शादी हुई, तो ससुराल का घर अच्छा न मिला। ससुराल वाले धर्म के नाम तक से चिढ़ते थे, उन्हें जैन धर्म से तो बहुत ही नफरत थी। खास तौर से उसकी सास, न तो खुद धर्म करती थी और न दूसरे को करने देती थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोमा के सामने बड़ी कठिनाई आई। अब वह बेचारी क्या करे? क्या अब अपना धर्म छोड़ दे? नहीं, उसने सब संकट सहने मंजूर किए, परन्तु अपना धर्म नहीं छोड़ा। वह रोज सुबह उठकर नवकार मन्त्र की माला पढ़ती और सामायिक करती।

सास ने उसे बहुत रोका, बहुत बुरा-भला कहा। पर वह न मानी। सोमा ने सास से बड़ी विनय के साथ कहा—"आप मुझ पर नाराज न हों। आप जो आज्ञा देंगी, जो सेवा बताएँगी, खुशी-खुशी उसको पूरा करूँगी। परन्तु अपना धर्म नहीं छोड़ सकती। दिन रात के चौबीस घण्टों में दो घड़ी भगवान का भजन करती हूं, कुछ अधिक समय तो नहीं लेती।"

सोमा की प्रार्थना का सास पर कुछ असर नहीं हुआ। वह उसी तरह बकझक करती रही। कभी-कभी तो बहुत झगड़ती, मार-पीट भी करती। पर सोमा शान्ति के साथ सब संकट सहती रही। उसने बदले में सास को कभी एक शब्द भी बुरा न कहा। सोमा बहुत भली लड़की थी। गुरुदेव और पिताजी से उसने अहिंसा धर्म की बहुत सुन्दर शिक्षा पाई थी। वह शान्ति का महत्व समझती थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक दिन सोमा की सास ने बड़ा ही भयंकर काम किया। उसने सँपेरे से एक जहरीला साँप मँगाया और घड़े में बन्द करके रख दिया। दिन छिपने पर सोमा को कहा कि 'जाओ, उस घड़े में फूलमाला रक्खी है उठा लाओ।' इस तरह वह सोमा को मार कर रोज-रोज का झगड़ा खत्म कर देना चाहती थी।

परन्तु सोमा को अपने धर्म पर बड़ा दृढ़ विश्वास था। वह उठी और घड़े के पास जाकर पहले भगवान का स्मरण किया। नवकार मन्त्र पढ़ा और फिर घड़े में हाथ डाला। ज्योंही हाथ बाहर निकाला, तो हाथ में साँप की जगह सचमुच फूलों की माला थी। सास यह देखकर हैरान हो गई। सोमा पास आकर माला देने लगी तो सास ने अलग रखवा दी। अलग रखते ही वह फिर साँप हो गया।

सास ने समझ लिया— "सोमा सच्ची धर्मात्मा है। भगवान् की भक्त है। इसके धर्म के प्रभाव से ही साँप फूलों की माला बन गया। सच है, धर्म से क्या नहीं हो जाता। सीताजी के धर्म के प्रभाव से धधकती हुई आग पानी बन गई थी। महासती द्रौपदी का सभा में चीर बढ़ गया था।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हमारा भाग्य बहुत अच्छा है कि हमें ऐसी धर्मात्मा बहू मिली।"

उस दिन से सास सोमा को प्यार करने लगी। सोमा की इज्जत सास की आँखों में बहुत बढ़ गई। अब तो सास भी और सब घर वाले भी, सोमा की तरह, धर्म का पालन करने लगे।

धर्म में बहुत बड़ी शक्ति है। वह बड़े से बड़े चमत्कार दिखा सकता है। परन्तु सच्चा विश्वास मन में होना चाहिए। विश्वास के बिना कुछ नहीं होता।

अभ्यास

१ सोमा कौन थी ?

२ उसकी सास क्यों नाराज रहती थी ?

३ घड़े में साँप क्यों रक्खा था ?

४ साँप फूल की माला क्यों बन गयी थी ?

५ धर्म में शक्ति है, परन्तु कब ?

★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्थानक में क्या नहीं करना

स्थानक हम जैनों का एक बहुत ही पवित्र धर्म स्थानक है। है। वहाँ हम सामायिक, संवर आदि धर्म - ध्यान और भगवान महावीर आदि महापुरुषों का भजन करते हैं। जब कभी गुरुदेव पधारते हैं, तो वहाँ उनके दर्शन करते हैं और व्याख्यान सुनते हैं।

अपने धर्म स्थान की मान - मर्यादा का ध्यान रखना, हमारा मुख्य कर्त्तव्य है। यदि हम ही अपने धर्म स्थान का गौरव न रक्खेगे, तो फिर दूसरा कौन रक्खेगा। इसलिए स्थानक में जाकर इन बातों का ख्याल रखना चाहिए।

१ जूते अन्दर नहीं ले जाने।

२ फल, फूल, सब्जी वगैरह भी नहीं रखना।

३ रेशम के बने हुए अपवित्र वस्त्र नहीं पहनने।

४ मैले और गन्दे कपड़े भी नहीं रखने।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५ पान - सुपारी खैनी आदि भी नहीं चबाना।

६ इधर - उधर हर जगह नहीं थूकना।

७ ताश, चौपड़ आदि कोई खेल नहीं खेलना।

८ आपस में लड़ना - झगड़ना नहीं।

९ किसी को गाली नहीं देना, क्रोध नहीं करना।

१० झूठ नहीं बोलना।

११ सिनेमा आदि के गन्दे गीत नहीं गाने।

१२ धर्म पुस्तकों को लापरवाही से नहीं डालना।

१३ गुरुदेव के आसन को पैर नहीं लगाना।

१४ गुरुदेव की ओर पीठ नहीं करना।

१५ व्याख्यान के समय आपस में बात नहीं करना।

अभ्यास

१ स्थानक किसे कहते हैं ?

२ स्थानक में तुम क्या करते हो ?

३ गुरुदेव कहाँ ठहरते हैं ?

४ स्थानक में क्या नहीं करना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

: १७ :

विद्या

विद्या धन उद्यम बिना, कहो जु पावै कौन।
बिना डुलाए ना मिले, ज्यों पंखा को पौन॥

करत-करत अभ्यास के, जड़मति हो सुजान।
रसरी आवत-जात ते, सिल पर पड़त निसान॥

सरसुति के भण्डार की, बड़ी अपूरब बात।
ज्यों-ज्यों खरचै त्यों बढ़ै, बिन खरचे घटिजात॥

नहीं रूप कछु रूप है, विद्या रूप-निधान।
अधिक पूजियत रूप ते, बिना रूप विद्वान॥

बिद्या धन सब धनन तें, अति उत्तम ठहराइ।
छीने न कोऊ सकत है, चोर न सकत चुराइ॥

उत्तम विद्या लीजिए, जदपि नीच पै होइ।
पड़ो अपावन ठौर में, कंचन तजत न कोइ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढ़िवे में मन दीजिये, विद्या हो भरपूर।
गुरू को सेवा कीजिए, मन तें छल करि दूर॥

नहिं धन धन है बुध कहैं, विद्या वित्त अनूप।
चोर सकै नहिं चोर हूं, छोरि सकै नहिं भूप॥

धन में विद्या-धन बड़ो, रहत पास सब काल।
देय जितो बाढ़ै तितो, छोर न सकत नृपाल॥

बिद्या ददाति विनयं,
विनयाद् याति पात्रताम्
पात्रत्वाद् धनमाप्नोति,
धनाद् धर्मः ततः सुखम्॥

—विद्या से विनय, विनय से पात्रता (योग्यता), पवित्रता से धन, धन से धर्म और धर्म से सुख मिलता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्वस्थ शरीर स्वर्ग है

HEALTH IS HEAVEN

पान मसाला	—	मौत मसाला
गुटका खाओ	—	गाल गलाओ
जर्दा खाओ	—	जीभ जलाओ
धूम्रपान	—	खतरे में जान
तम्बाकू का पान	—	कैन्सर का आह्वान

डॉ. आर. के. अग्रवाल

जीव - जन्तुओं के प्रति हमारा स्नेह प्रकृति के प्रति हमारे वास्तविक प्रेम को प्रकट करता है।

—जवाहर लाल नेहरू

क्रूरता के इन अपराधों से आप बचिए

गाय एवं अन्य जानवरों के पैर, सींग एवं गले को तंग रस्सी से इस प्रकार जकड़ कर बांधने से क्रूरता को प्रोत्साहन मिलता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

★ इससे हम जानवर को अंग भंग कर उन्हें मृत्यु की ओर धकेलते हैं।

★ गाय एवं बछड़ों को कसाई के हाथ बेचकर हम भी उनके वध के लिये उतने ही जिम्मेदार है।

★ अधिक दूध प्राप्त करने के लोभ में उनके शरीर में 'फूका' करना अथवा अन्य ठोस वस्तु प्रवेश कराना एक निर्मम अपराध है।

सूअर, गडुरियों के मुँह एवं पैर बाँध कर उन्हें बाँस या लाठियों पर उल्टा लटका कर ले जाना अत्यन्त पीड़ादायक है। उन्हें लाठियों से पीटना एवं तीखे भालों या सलाखों से गोदना या छेदना भी अपराध है।

किसी जानवर को ट्रक, रेलगाड़ी, बैलगाड़ी, रिक्शा आदि में उसे पीड़ादायक स्थिति में ले जाना एक अपराध है।

करुणा मण्डल परियोना

(446 I-C रोड सरदारपुरा, जोधपुर (राज.) द्वारा प्रसारित)

★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रयाण गीत

२६ जनवरी, गणतंत्र - दिवस तथा १५ अगस्त, स्वाधीनता-दिवस के प्रसंग पर आप सभी दूरदर्शन के माध्यम से सैनिक टुकड़ियों या स्कूली छात्र - छात्राओं के माध्यम से राष्ट्रभक्ति से युक्त प्रयाण - गीत सुनते रहे हैं। गुरुदेव द्वारा लिखित है यह धर्म - बालकों के लिए प्रयाण - गीत। पढ़िए तो जरा आँखों की परेड के माध्यम से ""!

जय जैन धर्म की बोलो,
जय जैन धर्म की बोलो।

धर्म अहिंसा सबका प्यारा,
हरता है जग का दुःख सारा।
प्रेम की मिसरी घोलो,
जय जैन धर्म की बोलो।

त्यागो वैर, विरोध, बुराई,
करो सभी की सदा भलाई।
मन की कुण्डी खोलो।
जय जैन धर्म की बोलो।

महावीर का नाम सुमरना,
जीवन का पथ उज्ज्वल करना।
पाप कालिमा धो लो,
जय जिनेन्द्र की बोलो।

अनेकान्त की ज्योति जगाना,
पक्षपात का भाव हटाना।
अमर सच्चाई तोलो,
जय जैन धर्म की बोलो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जब भी बोलो

बोलो किन्तु सच ! "सत्य ही भगवान है"—ऐसा कथन है भगवान महावीर का। सत्य से व्यक्ति की प्रतिष्ठा बढ़ती है। सत्य से सम्मान प्राप्त होता है, इज्जत बढ़ती है। सत्य हमारा रक्षक भी है। पाठशाला में गाया जाता है, बच्चों के द्वारा—"झूठ बोलना पाप है, घर के नीचे साँप है।" साँप भयावह होता है, जहरीला भी। झूठ भी जहर ही है। सत्य अमृत है—"सत्यमेव जयते नानृतम्।" गुरुदेव श्री की लेखनी सच ही तो कह रही है—

जब बोलो, तब सच-सच बोलो,
कभी न बातें रच-रच बोलो।
जब बोलो तब हँस कर बोलो,
बातों में मिसरी-सी घोलो।
जब बोलो तब झुककर बोलो,
सोच समझ कर रुक कर बोलो।
जब बोलो तब खुलकर बोलो।
अपने मन की बातें खोलो।
जब बोलो तब हितकर बोलो,
मन में आदर भर कर बोलो।
जब बोलो तब कम ही बोलो,
बिन अवसर मत मुँह को खोलो।
जब बोलो तब मीठा बोलो,
कभी न कुछ भी कड़ुआ बोलो।
कभी किसी का भेद न खोलो,
घर की बात न बाहर बोलो।
द्वेष, कपट रख कभी न बोलो,
निन्दा चुगली का मल धो लो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गागर में सागर :

लड़के की समझदारी

--- श्री यशपाल जैन

एक लड़का था। वह बड़ा सच्चा और ईमानदार था। एक दिन वह पड़ोसी के घर गया। पड़ोसी कहीं गया था। उसके यहाँ एक टोकरी में बहुत से सेब रक्खे थे। बड़े बढ़िया सेब थे। लड़के को सेब बहुत अच्छे लगते थे। लेकिन उसने उनको हाथ तक नहीं लगाया।

पड़ोसी लौटा तो देखा, सारे सेब ज्यों - के - त्यों रक्खे हैं। उसने लड़के से पूछा, "क्यों, तुम्हें सेब पसंद नहीं हैं क्या ?"

लड़के ने कहा, "मुझे सेब बेहद पसंद हैं।

पड़ोसी आश्चर्य चकित होकर बोला, "तो तुमने लिए क्यों नहीं ?"

लड़के ने कहा—"कैसे ले सकता था ?"

पड़ोसी बोला, "क्यों, इसमें क्या बात थी ? कोई देखने वाला तो था नहीं।"

"इससे क्या हुआ।" लड़के ने कहा, "कोई दूसरा देखने वाला हो या न हो मैं तो देख रहा था। मैं अपने को बेईमानी करते देखना हर्गिज बर्दाश्त नहीं कर सकता था !"

पड़ोसी इस बात को सुनकर गद्‌गद हो गया। उसने कहा, "तुम ठीक कहते हो। आत्मा सब में है और वह हमारे भले-बुरे, सब कामों को देखती रहती है।" ★

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शिक्षा का प्रारंभ

★ शिक्षा माता के चरणों से ही प्रारम्भ होती है, और शैशव की बातों में शिशुओं से कहा प्रत्येक शब्द उनके चरित्र का निर्माण करता है। — बेल

★ बहुधा देखा गया है कि वास्तविक शिक्षा तभी प्रारंभ होती है जब व्यक्ति विद्यालय या महाविद्यालय से निकलते हैं। — सन्त निहालसिंह

सीख बाल - जगत् को

जीवन निर्माण में व्यवहारिकता की भी अत्यन्त आवश्यकता रहती है। कैसे चलें, रहें आदि छोटी - छोटी बातों का ध्यान रखना भी परम आवश्यक है। बचपन में अंकुरित सुसंस्कार जीवन भर साथ निभाते हैं। पढ़िए, गुरुदेव श्री की लेखनी से आबद्ध ये व्यवहार-सूत्र···!

बड़ों को सदा आप कहकर बोलो, तुम या तू मत कहो। तू कहना तो बहुत ही भद्दा है। 'आप' बड़ों के लिए आदर-भाव का सूचक है।

जब किसी से बोलना हो तो बड़े आदर के साथ पिताजी, चाचाजी, भाईजी तथा अम्माजी, ताईजी, बहनजी, आदि यथा-योग्य विशेषण लगाकर बोलना चाहिए।

अपने से बड़ों के साथ चलना हो तो उनसे एक दो कदम पीछे रहो, वे पीछे हों तो मार्ग देकर, उनको आगे हो जाने दो। दरवाजे के अन्दर जाना हो तो पहले उनको जाने दो। दरवाजा वन्द हो तो आगे बढ़ कर उसे खोल दो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

राष्ट्रसन्त उपाध्याय कविश्री जी महाराज द्वारा लिखित जैन बाल-शिक्षा चार भाग बाल विद्यालयों में नन्ने-मुन्ने बच्चों के लिए धार्मिक शिक्षा हेतु बहुत ही उपयोगी पुस्तकें हैं। भारत के अनेक प्रांतों के स्कूलों की कक्षाओं में इन पुस्तकों को नैतिक शिक्षा के साथ पढ़ाया जाता है।

आप भी अपने बच्चों के लिए एवं पाठशालाओं के लिए उपरोक्त पुस्तकों को मंगाकर अपने बच्चों के नैतिक जीवन का विकास करें।

व्यवस्थापक
रामधन शर्मा
साहित्यरत्न

१	जैन बाल शिक्षा	भाग-१
२	जैन बाल शिक्षा	भाग-२
३	जैन बाल शिक्षा	भाग-३
४	जैन बाल शिक्षा	भाग-४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org